ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-8* September- 2021
Innovation The Research Concept

पड़ोसी राष्ट्रों के सन्दर्भ में भारतीय प्रतिरक्षा तैयारी

Indian Defence Preparedness with Reference to Neighboring Countries

Paper Submission: 10/09/2021, Date of Acceptance: 23/09/2021, Date of Publication: 24/09/2021

वेद किशोर रतूड़ी
अतिथि शिक्षक,
रक्षा, स्त्रॉतेजिक एवं भू-राजनीतिक अध्ययन विभाग,
हे0 न0 ब0 ग0 विश्वविद्यालय,
श्रीनगर, गढ़वाल,
उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

भारत स्वतन्त्र होने से लेकर अभी तक अपनी रक्षा पंक्ति को मजबूत करने में अग्रसर है। यद्यपि सर्वविदित है कि भारत ने कभी भी किसी दूसरे देश पर आक्रमण नहीं किया और वह सदैव विश्वशन्ति का पक्षधर रहा है, आज भी अपनी इस परम्परा पर कायम है परन्तु शान्ति की इस अभिलाषा का हमारे कुछ पड़ोसी देशों ने इसे हमारी कमजोरी समझा है जिसके परिणामस्वरूप हमें पड़ोसी राष्ट्रों से कई अपरिहार्य युद्ध भी करने पड़े। फिर भी भारत विश्व शान्ति व बन्धुत्व की भावना चाहता है, इसीलिये वह न तो हथियारों की ज्यादा होड़ में फंसना चाहता है और न ही अपने परमाणु शक्ति का अनावश्यक प्रदर्षन लेकिन इसका अर्थ यह भी नहीं है कि हमारी सुरक्षा व्यवस्था ढ़ीली पड़ जाये और हम अपनी सेनाओं का आधुनिकीकरण न करें और उन्हें आधुनिक हथियारों से लैस न करें क्योंकि पड़ोसी राष्ट्रों का रूख पूर्व की भांति आक्रामक हो सकता है। यह सभी राष्ट्रों को मालूम है कि वर्तमान समय में आधुनिक, श्रेष्ठ हथियारों की दौड़ में अमेरिका सर्वोपरि है और हमारे राजनीतिज्ञ उससे मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध चाहते हैं ताकि हमें रक्षा प्रणाली से सम्बन्धित तकनीकि प्राप्त हो सके।

India has been marching ahead to strengthen its defense line since independence. Although it is well known that India has never invaded any other country and has always been in favor of world peace, even today it has maintained its tradition, but some of our neighboring countries have considered it as our weakness, as a result of this desire for peace. We also had to wage many inevitable wars with neighboring nations. Still India wants world peace and a sense of fraternity, that is why it does not want to get into an arms race, nor unnecessary display of its nuclear power, but it also does not mean that our security system should be lax and we should Do not modernize the armies and do not equip them with modern weapons because the attitude of neighboring nations may be as aggressive as before. It is known to all nations that America is at the fore in the modern, best arms race and our politicians want friendly relations with it so that we can get technology related to the defense system.

मुख्य शब्दः रक्षा, प्रतिरक्षा, भारतीय वायु सेना, सैन्य शक्ति ।

Defence, Defence, Indian Air Force, Military Power.

प्रस्तावना

भारत के स्वतन्त्र होने के बाद भारत अपनी प्रतिरक्षा के प्रति कटिबद्ध रहा और अनेक सफलताओं को अर्जित करता हुआ निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। प्रत्येक राष्ट्र का सैन्य संगठन वर्तमान सुरक्षा तथा युद्ध की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुये किया जाता है, राष्ट्र की सुरक्षा करना वहाँ की सेना का मुख्य कर्तव्य होता है और वह ऐसी स्त्रॉतेजी का निर्माण करती है जिससे कम से कम समय में तथा राष्ट्र की क्षति को मध्य नजर रखते हुये विजय प्राप्त करे सके। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद जब भारत अपनी सशस्त्र सेनाओं के पुनर्गठन में रत था तब पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर दिया जिससे भारत को अपनी सेनाओं को तथा अपने प्रतिरक्षा तन्त्र में और आधुनिकीकरण हेतु सजग कर दिया। साथ ही बची-खुची कमी को पूर्ण करने के लिये चीन ने हमारी आंख खोल दी कि हम अपने जल, थल व वायु सेनाओं के निर्धारित पंक्ति के रूप में एक दूसरे के सामंजस्य में सहयोग के प्रति कटिबद्ध हों क्योंकि भारत की सामुद्रिक सीमायें काफी विस्तृत होने के कारण तीनों सेनाओं के सहयोग की निरन्तरता को तथा पड़ोसी राष्ट्रों के तेवर तथा भावी जेहादी खतरों को देखते हुये भारत को अपनी सशस्त्र सेनाओं के पुनर्गठन की और आवश्यकता है।

थल सेना

भारतीय थल सेना का मुख्यालय नई दिल्ली में है थल सेना दिवस 15 जनवरी को मनाया जाता है। भारतीय सेना में लगभग 14 लाख कार्यरत सैनिक है।1 भारतीय थल सेना पर

सुरक्षा की दृष्टि से लगभग 15100 कि0मी0 लम्बी सीमा की रक्षा का दायित्व है। उसमें 1900 कि0मी0 लम्बी सीमा में गुजरात का दलदल और रेगिस्तान का धूल उड़ाता रेगिस्तान है। पंजाब व जम्मू की घनी आबादी वाले क्षेत्रों के अतिरिक्त जम्मू कश्मीर में हिमाचल पर्वत श्रृंखला से जुड़े घने जंगल व ऊँची पहाड़ियां, जिनमें ऐसी चैकियां भी हैं जहां साल भर बर्फ पड़ती रहती है। जहाँ पर सुरक्षा कार्य बड़ा जोखिम भरा है। 3200 कि0मी0 लम्बी भारत-तिब्बत सीमा लद्दाख से शुरू होती है और पूर्व की ओर बढ़ जाती है। इनमें तिब्बत का मार्ग अत्यन्त दुर्गम है। बांग्लादेश से लगी भारतीय सीमा की रक्षा को बांग्लादेश की गतिविधियों से बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें कोई शक नहीं कि अनेक दुर्लभ, पथरीले व बर्फ से ढ़के पहाड़ों पर हमारी थल सेना मौजूद है और देश की सुरक्षा का दायित्व यथाचित ढंग से कर रही है। भारतीय थल सेना की शौर्य गाथायें हजारों वर्ष पुरानी है। प्रामाणिक, ऐतिहासिक दस्तावेज भारतीय सिपाहियों की शूरवीरता की साक्षी है। वस्तुतः आधुनिक भारतीय सेना की कहानी 1857 के बाद ही प्रारम्भ होती है जिसमें अंग्रेजों ने स्थल सेना में भाड़े के सैनिकों को अतिरिक्तरूप में रखकर अपने अनेक अभियानांे में सफलता अर्जित की।2

यघपि भारतीय थल सेना का उद्भव ईस्ट इंडिया कम्पनी के गश्ती दलों के रुप में हुआ और 1748 में यह एक नियमित थल सेना के रूप में अस्तित्व में आयी। 1947 में देश के विभाजन के समय उसे दोनों ओर शरणार्थियों की सुरक्षा और कानून व्यवस्था बनाये रखने का दायित्व सौंपा गया और 1947-48 में जम्मू कश्मीर में कबायली संघर्ष के नाम पर पाकिस्तान से संघर्ष हुआ जिसमें भारतीय थल सेना ने बड़ी वीरता से अपनी उत्कृष्ट क्षमता का प्रदर्शन किया। 1949 में भारतीय सेना के जनरल के0एम0करियप्पा, कमाण्ड इन चीफ बने और सेना के पूर्ण रूप से भारतीयकरण की प्रक्रिया शुरू हुयी जिसमें जनरल करियप्पा के चार वर्ष के कार्यकाल में सेना ने मूलभूत आधुनिकतम के रूप में उत्कृष्ट अनुशासन कोर भावना, उच्च कार्य क्षमता और स्वस्थ सैनिक साहस का संचार किया। जनरल करियप्पा के बाद थल सेना नियमित रूप से देश की सुरक्षा में कार्य करती रही सेना को एक नया स्वरुप देने के उददे्श्य से साथ ही विज्ञान एवं तकनीकि के क्षेत्र में अधिकाधिक विकास हेतु डी0आ0डी0ओ0 (रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन) का गठन 1958 में दिल्ली में किया गया है। जिसका दाहित्व सेना की आवश्यकता की पूर्ति हेतु यौद्विक हथियारों की नकाशी (डिजायन) एवं विकास के साथ स्थल, नभ और नौ सेनाओं में वैज्ञानिक परामर्श के माध्यम उपयोगी बनाना है।3 परन्तु दुर्भाग्य- वर्ष 1962 में चीन द्वारा आक्रमण किये जाने पर हमारी सेना, पूर्णरूप से सफल नहीं रही उसे चीन से हार का सामना करना पड़ा। इस करारी हार ने भारतीय सेना को अपनी कार्यशैली तथा प्रखर गुणवत्ता में अमूख परिवर्तन करने के लिये बाध्य किया और 1965 और 1971 में पाकिस्तान से दो अपरिहार्य युद्ध से जूझना पड़ा तथा फिर दुश्मन को यह बता दिया किया अब भारतीय थल सेना अपने खोये हुये अभिमान को बटोरने में सफल हो चुकी है। भारतीय थल सेना आज विश्व में चैथे स्थान पर अपना अस्तित्व बनाये हुये है। आज भारत के पास लगभग 14 लाख सैनिकों वाले कई आर्मड डिवीजन, मैकेनाइज डिवीजन, आर्मड ब्रिगेड, इन्फेन्ट्री ब्रिगेड, पहाड़ी युद्ध में कौशल माउंटेन ब्रिगेड, पैराशूट ब्रिगेड और इन्जीनियरिंग ब्रिगेड है।4 इसमें अधिक गतिशील डिवीजन रैपिडस हवाई आक्रमण, जल थल पर काम करने वाली और तोपखाना डिवीजनों को भी जोड़ा गया है। यंत्रीकृत सेना में भी बढ़ोत्तरी की गयी है। मुख्य युद्धक टैंको पर आधारित दो आर्मड डिवीजनों के अलावा यंत्रीकृत डिवीजन भी हैं। उपर्युक्त सेना-2 डिवीजन, पैदल सेना-20 डिवीजन, पर्वतीय सेना-11 डिवीजन, स्ववंत्र कवचयुक्त सेना-5 डिवीजन, छाताधारी सैनिक-2 ब्रिगेड, छापामार सेना-1 ब्रिगेड, स्वतंत्र तोपची-20, विमान भेदी तोप के रिलेमेण्ट-14, स्वतंत्र तोपखाने के ब्रिगेड शरतीय थल सेना के शस्त्र -टी-55, टी-72, विजयन्त टैंक, प्रचण्ड प्रहार क्षमता वाला मुख्य टैंक "अर्जुन", यह टैंक विश्व के सर्वश्रेष्ठ टैंकों में से एक है। पी.टी.-76, सोवियत टी-172, टी.-90 टैंक, चीनी हैलीकाप्टर व विमान, टाइगर कैट एस.ए.एम. प्रक्षेपास्त्र आदि आधुनिक शस्त्र मौजूद हैं। भारत अगले पांच वर्षों में अत्याधुनिक टी.-90 मुख्य युद्धक टैंक का निर्माण शुरू करने जा रहा है साथ ही भारत ने रूस से 300 टी.-90 टैंकों की खरीद भारतीय प्रतिरक्षा के लिए अहम कदम साबित होगा।

प्रक्षेपास्त्र युग में थल सेना की भूमिका

प्रक्षेपास्त्र के इस युग में भारत आज सर्वाधिक भरोसा अपनी थल सेना पर करती है। इस बात से कोई संदेह नहीं कि आज भारत प्रक्षेपास्त्र प्रणाली में अपनी अहम भूमिका अदा कर रहा ह परन्तु इस बात से भी हमारी सेना को

थल सेना — कमान/क्षेत्र	मुख्यालय
उत्तरी	उधमपुर
दक्षिणी	पुणे
मध्यवर्ती	लखनऊ
पूर्वी	कोलकाता
पश्चिमी	चंडी मंदिर, चंडीगढ़
प्रशिक्षण	शिमला
दक्षिणी—पश्चिमी	जयपुर

तथा रक्षा विशेषज्ञों को भी अवगत होना चाहिये कि वह इस प्रणाली को सुचारू रूप से कार्यरत करने में सक्षम और प्रशिक्षित हैं या नहीं? जब कि पड़ोसी राष्ट्र हमारी प्रक्षेपास्त्र प्रणाली को सन्तुलित करने में अपनी कार्यप्रणाली को दिन प्रतिदिन आधुनिक रूप से और भी प्रशिक्षित कर रहे हैं। क्या रक्षा विशेषज्ञों को इस बात की जानकारी या आभाश है कि भारतीय सेना इसमें पूर्ण रूप से सक्षम है? कारगिल युद्ध के दौरान यद्यपि यह तथ्य सामने आया था कि प्रतिरक्षा मंत्रालय की अत्याधिक लापरवाही के कारण समय पर हथियार खोजी रडार प्रणाली की खरीद नहीं हो सकी थी जो कि भारत के पास नहीं थी जिसके कारण भारतीय सैनिकों को भारी मात्रा में क्षति का सामना करना पड़ा था। जिसका प्रतिफल यह हुआ कि हमारे शत्रु राष्ट्र के पास हथियार खोजी राडार थे जिसके कारण उसने हमारे तोपखाने के अनेक ठिकानों को नष्ट करने में सफलता प्राप्त की। यह बिडम्बना ही है कि हमारी रक्षा प्रणाली में एक ओर तो हम हल्के लड़ाकू विमान व परमाणु पनडुब्बियों के निर्माण की बात करते रहे दूसरी ओर हमारी सुरक्षा विशेषज्ञ हथियार खोजी रडार प्रणाली का निर्माण नहीं कर सके। आखिर जब हम प्रक्षेपास्त्र प्रणाली को विकसित कर सकते हैं तो हथियार खोजी रडार क्यों नहीं बना सकते हैं?5

प्रशिक्षण संस्थान — नाम	स्थान
राष्ट्रीय सुरक्षा अकादमी	खड़कवासला
भारतीय सैनिक अकादमी	देहरादून
राष्ट्रीय भारतीय सैनिक कालेज	देहरादून
राष्ट्रीय रक्षा कालेज	नई दिल्ली
रक्षा सेवा स्टाफ कालेज	वेलिंगटन (तमिलनाडू)

अतः इस बात में थोड़ा समन्वय का अभाव है। हमारी सुरक्षा पूर्णरूप से थल सेना में निहित है और उसमें सबसे बड़ी भूमिका तोपखाना व टैंक में निहित है जिसमें बोफोर्स तोप यद्यपि सबसे अधिक सक्षम है परन्तु कलपुर्जों की कमी और रखरखाव में येन-केन समय में वह अपना कारगर उपयोग से वंचित रह जाती है। यदि इन तोपों का निर्माण भारत में होने लगे जाये तो शायद भारत की सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ होगी और हमें बाहरी देशों से तोपों के खरीद हेतु झुकना नहीं पड़ेगा। ब्रह्मोस मिसाइल भारत तथा रूस के सहयोग से निर्मित इस प्रक्षेपास्त्र को वर्ष 2003 में भारतीय सेनाओं में शामिल कर लिया गया है जिसकी मारक क्षमता 209 कि0मी0 तक मार्ग करने में सक्षम है। इसकी गति ध्वनि की गति से लगभग तीन गुना है। पी.जी. 10 का 28 अप्रैल, 2002 को सफल परीक्षण किया गया, सतह से सतह पर मार करने वाली सुपरसोनिक बम मिसाइल 280 क्षमता व अग्नि-2 प्रक्षेपास्त्र है जो जमीन से जमीन पर 2000 कि0मी0 दूरी तक मार कर सकती है। सतह से सतह तक मार करने वाली "पृथ्वी" जिसकी मारक दूरी 150 से 250 कि0मी0 है। सतह से हवा में 27 कि0मी0 मार करने वाला बहुलक्षी प्रक्षेपास्त्र "आकाश" 4 से 6 कि0मी0 रेंज वाली टैंक

नाशक मिसाइल "नाग", जमीन से हवा में 5 से 8 कि0मी0 मार करने वाला "त्रिशूल" और मध्यम दूरी वाला भारत का महत्वाकांक्षी प्रक्षेपास्त्र "अग्नि" शामिल हैं।"अस्त्र" यह हवा से हवा में मार करने वाली भारत की पहली मिसाइल है इसकी मारक क्षमता 15 से 80 कि0मी0 है। इसे मिराज 2000, मिग 29, सुखोई 30 व तेजस विमानों पर लगाया जायेगा। इस बढ़ते प्रक्षेपास्त्र प्रणाली में कोई शक नहीं कि भारत की रक्षा प्रणाली निरन्तर प्रगति पर है परन्तु इतने से ही काम नहीं चलेगा। हमारा पड़ोसी राष्ट्र चीन हम से प्रक्षेपास्त्र प्रणाली में काफी आगे है और पाकिस्तान भी हमारी प्रक्षेपास्त्र प्रणाली से सावधान है। वह अपनी अन्तरद्वीपीय मिसाइलों को बढ़ाने में अग्रसर है। इसी उद्देश्य से भारत ने काफी लम्बे समय से प्रयासरत अग्नि-3 का सफल परीक्षण किया जिसके परिणामस्वरूप आज भारत विश्व के उन चुनिन्दा देशों की सूची में शामिल हो गया जो बैलिस्टिक मिसाइल बनाने की क्षमता रखते हैं। बस इस बात का इन्तजार है कि सरकार को अतिशीघ्र इसे सेना में शामिल कर देना चाहिये और इसके अलावा समुद्र के भीतर से छोड़ी जाने वाली परमाणु मिसाइल की सफलतापूर्वक विकसित किये जाने की औपचारिक घोषणा भी भारतीय वैज्ञानिक कर चुके हैं। जहां तक पाकिस्तान की बात है सभी जानते हैं कि यह राष्ट्र भारत के प्रति शत्रुता भाव से भरा हुआ है। यद्यपि पाकिस्तान वैसे प्रक्षेपास्त्र बनाने में काफी दूर है, जैसे हमारे पास हैं परन्तु उसकी इस दिशा में चेस्टापूर्ण प्रकाष्ठा पर वह "बावरी" "शाहीन" जैसे कई किलोग्राम बारहेड ले जाने में सक्षम है जिसका समुचित प्रयोग यदि वह भारत पर करता है तो हमारे पास उनका प्रतिवार करने वाली मिसाइलों का होना अतिआवश्यक है। दूसरी ओर चीन पाकिस्तान के प्रक्षेपास्त्र कार्यक्रम को मदद्त देने में हमेशा से तत्पर रहा है। प्रक्षेपास्त्र के विकास के मामले में चीन और पाकिस्तान के जो सम्बन्ध हैं उन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

भारतीय वायु सेना

भारतीय वायु सेना का मुख्यालय नई दिल्ली में है। भारतीय वायु सेना अधिनियम 8 अक्टूबर, 1932 को लागू किया गया। इसीलिये तीनों सेनाओं में वायु सेना की स्थापना सबसे बाद में हुयी।

वायु सेना – कमान/क्षेत्र	मुख्यालय
पूर्वी क्षेत्र	शिलांग
पश्चिमी क्षेत्र	नई दिल्ली
मध्य क्षेत्र	इलाहाबाद
दक्षिणी–पश्चिमी	गांधीनगर
दक्षिणी क्षेत्र	तिरूवअनन्तपुरम्
प्रशिक्षण कमान	बंगालुरू
रख–रखाव कमान	नागपुर

तथापि इसने समाधान और शांति दोनों के दौरान उल्लेखनीय सेवा की है। 26 जनवरी, 1950 को जब भारत सार्वभौमिक गणतन्त्र घोषित हुआ तब भारतीय वायु सेना के पहले लगने वाले 'रायल' शब्द को हटा दिया गया और 1954 को एयर मार्शल सुब्रत मुखर्जी को स्वतन्त्र भारत का पहला चीफ आॅफ एयर स्टाफ बनाया गया। 1 अप्रैल, 1954 को राष्ट्रपति ने वायुसेना को ध्वज प्रदान किया और तब से आज तक भारतीय वायु सेना अपने विस्तृत आकाश का सजग प्रहरी होने के साथ ही थल एवं जल सेना को सहयोग देने की भूमिका महत्वपूर्ण तरीके से निभाता आ रहा है।6 दुगर्म स्थानों में बचाव एवं पूर्ति के सन्दर्भ में भी वायुसेना का योगदान बेमिसाल होता है। 1947-48 में हन्टर व कैनबरा काम्बर तथा 1960-61 में रूसी लड़ाकू विमान मिग तथा ए.एन.-12 परिवहन विमान खरीदे गये। प्रथम पंचवर्षीय योजना रक्षा योजना के अंतर्गत नभ सेना की शक्ति 45 स्क्वार्डन तक बढ़ा दी गयी और फिर से ए.वी.आर.ओ. 748 तथा बंगलौर में नेट मिग-21, एच.एफ. 24 (मारूत) का निर्माण का कार्य तीव्र किया गया। ध्वनि से तेज चलने वाले अन्य जेट विमानों के निर्माण का कार्य भी भारतीय वायुसेना निर्माण उद्योग द्वारा किया जा रहा है। 1947 में देश की आजादी के समय भारतीय वायुसेना के पास मात्र 10 स्क्वार्डन थे जिसके बाद

20 की बढ़ोत्तरी हुयी और आज लगभग 50 स्क्वार्डन से अधिक हैं।

प्रशिक्षण संस्थान — नाम	स्थान
वायु सेना का प्रषासनिक कालेज	कोयंबटूर
वायुसेना अकादमी	हैदराबाद
वायुसेना का तकनीकी कालेज	जलाहली
वायुसेना स्कूल	सांब्रा (बेलगांव)
विमान अनुदेशक स्कूल	तांबरम
वायुसेना स्टेशन	बीदर
वायुसेना स्टेशन	हकीमपेट
वायुसेना स्टेशन	येलाहंकी
हेलीकाप्टर प्रशिक्षण स्कूल	आवडी
भूतल प्रशिक्षण स्कूल	आवडी
भूतल प्रशिक्षण संस्थान	बाडोदरा और बैरकपुर

सैन्य शक्ति

लगभग 1,50,000 सैन्य अफसर, वायुसेना स्क्वेड्रन, 35 केनबरा, 18 जगुआर एफ. जी.ए., 396 वायुयान, 11 स्क्वार्डन इसके अलावा मिराज 2000, मिग 21, मिग 23, मिग 27, मिग 25 अपीत हन्टर, रूसी मिग 29 को अमेरिका के एफ 16 के समकक्ष माना जाता है तथा रूस से जो लिये गये यू-30 साथ ही अब भारत विदेशों में विमान खरीदने के बजाय स्वयं निर्माण कार्य में कार्यरत है। भारत ने लड़ाकू विमान, खतरनाक शस्त्र प्रणाली और अन्य संयंत्र एवं उपकरण अपनी वायुसेना में शामिल किये हैं। इसलिये भारतीय वायुसेना ने पुराने वायुयानों से लेकर आधुनिक मिराज 2000 और मिग 29 तक का लम्बा सफर तक किया परन्तु अब हवा से जमीन पर मार करने वाली मिसाइलों व उन्नत रडार प्रणालियों का विकास करके अपनी समाघात क्षमता में निरन्तर बढ़ोत्तरी की है। पायलट रहित विमान "निशान्त", बिना पायलट के उड़ने वाला यह विमान जिसकी खूबी दुश्मन के द्वारा इलेक्ट्रानिक निरोधक इस्तेमाल करने पर भी जाम नहीं होता और सफलतापूर्वक अपना काम करने में सफल रहता है। पायलट रहित दूसरा विमान "लक्ष्य", यह भारत में निर्मित पायलट रहित विमान है। यह 750 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से 40 मिनट से अधिक देर तक उड़ान भरने में सक्षम है। मिराज 2000 भारतीय वायु सेना में सबसे बड़ा शक्तिशाली विमान है। भारत में हल्का लड़ाकू विमान तेजस हैल्किॉप्टर, पिनाक, मल्टी बेरल राकेट लांचर ब्रहमोस मिसाइल आकाश, मिसाइल डिफेस सिस्टम, एयर टू एयर मिसाइल के साथ ऐसे अनेक हथियार जो पूरी तरह भारत में उनका निर्यात पर फोकस कर रहा है।7

अग्नि -4 को सशस्त्र बलों में शामिल किया गया है। और अग्नि 5 को 2016 के परीक्षणों में में चार बार सफलता पूर्वक लांन्च किया जा चुका है। अग्नि-4 की रेंज 4000 किमी0 और अग्नि 5 की रेंज 5300 से 6000 किमी0 है।8 भारत और फ्रांस बीच रक्षा समझौते के चार साल बाद भारतीय वायुसेना में 10 सितम्बर 2020 को चार राफेल फाइटर शामिल हुये है। दोनों देशों के बीच 59,000 करोड़ रूपये की कीमत पर 36 राफेल को खरीदने का सौदा हुआ है। राफेल विमान की भार वहन क्षमता 9500 किलोग्राम है और अधिकतम 24,500 किलोग्राम तक के वजन के भार के साथ 60 घंटे अतिरिक्त उड़ान भरने में सक्षम है, राफेल एक मिनट में 60 हजार फुट की ऊँचाई तक उड़ान भर सकता है।9 एस-400 डिफेस सिस्टम दुश्मन के एयरक्राष्ट को आसमान से गिरा सकता है। एस-400 रूस का सबसे अडवांस लॉन्ग सर्फेस-टू-एयर मिसाइल डिफेस सिस्टम माना जाता है। यह दुश्मन के क्रूज, एयरक्राष्ट और बैलेस्टिक मिसाइल को मार गिराने में सक्षम है। यह सिस्टम रूस के ही एस-300 का नया अपग्रडेड वर्जन है। इस मिसाइल सिस्टम को अल्माज आंते ने तैयार किया है। जो रूस में 2007 के बाद से ही सेवा में है। यह एक ही राउंड में 36 वार करने में सक्षम है। इसे सतह से हवा में मार करने वाला दुनिया का सबसे सक्षम मिसाइल डिफेंस सिस्टम माना जाता है। भारत ने रुस के साथ अत्याधुनिक एस-400 मिसाइल सिस्टम को खरीदने की भी डील की है। भारत को वर्ष 2021 के अन्त में एस-400 मिसाइल सिस्टम की पहली खेप मिलने की उम्मीद है।10

अध्ययन का उद्देश्य

पड़ोंसी राष्ट्रों के सन्दर्भ में भारतीय प्रतिरक्षा तैयारी का मुख्य उद्ेश्य यह है कि वैश्विक युग में हर राष्ट्र अपनी प्रतिरक्षा तैयारी के आधुनिकीकरण के प्रति श्रेष्ट हथियारों की ओर अग्रसर है। यद्यपि आज भारत परमाणु सम्पन राष्ट्र है, जो चारों ओर से परमाणु हथियार से सम्पन राष्ट्रों से घिरा हुआ है। वर्तमान समय में युद्ध और रक्षा के तौर-तरीके में काफी बदलाव आया है। अब लम्बी लड़ाईयॉ का वक्त नहीं है, अधिकांश युद्ध छोटे-मोटे तरीके से लड़ें जा रहें हैं जिसमें तकनीकि कला की भूमिका अहम है। आज हम अपनी विदेश नीति के माध्यम से विकसित राष्ट्रों से रक्षा से सम्बन्धित हथियार और तकनीकि खरीद रहें है। ताकि भविष्य में होने वाले युद्धों से हम अपने आप को सुरक्षित महसूस कर सकें।

भारतीय नौ सेना

थल सेना व वायु सेना की भाँति हमारी नौ सेना भी देश की रक्षा में सन्नत है। इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है स्थापना दिवस 4 दिसम्बर को मनाया जाता है। इस सेना को राष्ट्र की समुद्री हितों की रक्षा की जिम्मेदारी सौंपी गयी है। इन समुद्री हितों के तहत लगभग 6100 किलो मीटर लम्बा समुद्री तट बहिवर्ती द्वीप समूह क्षेत्र 28 लाख वर्ग कि0मी0 व अन्य आर्थिक क्षेत्र समुद्र में स्थित तेल कुएं और समुद्री संसाधन, समुद्री मार्ग, मत्स्य हित पतन और बंदरगाह तथा समुद्री व्यापार के लिये आवश्यक पोत निर्माण तथा संबन्धित औद्यौगिक ढ़ांचा आते हैं।11 हमारा विस्तृत समुद्री सीमान्त तथा हिन्द महासागर में बढ़ती विदेशी नौ सेनाओं की हलचल किसी से छिपी नहीं है। इस क्षेत्र को शांति क्षेत्र अस्थापित करने में हमारी नौ सेना की भूमिका अग्रणीय रही है। 1971 के भारत पाक युद्ध में भारतीय नौ सेना ने अदम्य साहस का परिचय दिया साथ ही दुश्मन के दांत खट्टे कर दिये थे। अपनी शक्ति को अजेय सिद्ध कर दिया था। 1971 के भारत पाक युद्ध के दौरान एक ऐसी भी स्थिति सामने दिखने को मिली कि जब करांजी हार्वर में घुसने वाला या निकलने वाला हर विदेशी पोत पाकिस्तान की नौ सेना की जगह भारत की नौ सेना की आज्ञा लेकर आगे बढ़ता था और जब बांग्लादेश मुक्ति के दौरान भारतीय नौ सेना ने बंगाल की खाड़ी की ऐसी नाकेबन्दी की कि एक लाख से ज्यादा पाकिस्तानी सैनिकों को भाग सकने की सभी द्वार बन्द हो गये थे और उन्हें आत्मसमर्पण के लिये बाध्य होना पड़ा था। इस प्रकार स्पष्ट है कि हमारी नौसेना समुद्री क्षेत्र में शत्रु से मुकाबला करने के लिये हर तरह से सतर्क एवं अजेय है साथ ही भारत का लगभग 97 प्रतिशत समुद्री व्यापार में सुचारू रूप से कार्य करने में भी अपनी अहम भूमिका अदा कर रही है।

शरतीय नौ सेना शक्ति

-पनडुब्बी, कालवारी, खंडेरी, केरज, करसुरा, वेला वगीर, वागली, वशगीर,

नौ सेना — कमान/क्षेत्र	मुख्यालय
दक्षिणी	कोचीन
पूर्वी	विशाखापत्तनम्
पश्चिमी	मुंबई
प्रशिक्षण संस्थान — नाम	**स्थान**
जल सेना अकादमी	गोवा
आई. एन. एस. चिलका	उड़ीसा
आई. एन. एस. शिवांजी	लोनावाला
आई. एन. एस. बलसूरा	जामनगर
आई. एन. एस. सतवाहन	विशाखापत्तनम्
आई. एन. एस. हमला	मुंबई

सिंधुध्वज चक्र, सिन्धुघोष, सिन्धुराज इसके अलावा सिन्धुवीर और स्वदेश निर्मित पनडुब्बी "शल्की"एवं "शकुल", विराट, विक्रान्त के रिटायर्ड होने के बाद और सक्षम पोत हैं। 28500 टन भार, 750 फुट लम्बे, 90 फुट चैड़े एवं 27 फुट गहराई वाले विराट का निर्माण 1944 में एम.एस. हार्मिज के नाम से किया गया था। विराट के रूप में हार्मिज को 12 मई, 1987 को भारतीय सेना में शामिल किया गया।12 इस समय विराट तमाम स्वचालित यंत्रों और अत्याधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण हाने के अलावा हवा से हवा में मार करने वाली और समुद्री पनडुब्बियों से बचाव की तकनीकी आदि से लैस है।

कुजर- आई.एन.एस. मैसूर और दिल्ली, विध्वंसक- आई.एन.एस. राजपूत राणा गोमती-गोदावरी, गंगा। ब्रिगेड युद्धपोत- आई.एन.एस. नीलगिरी, हिमगिरी, ब्रह्मपुत्र, व्यास, वेतवा, कपाण, कुठार, तलवार, त्रिशूल, उदयागिरी, पुर्णागिरी, तारागिरी, विंध्यागिरी, खूंखरी, सरयू, माहन स्वोर्पाज

आई.एन.एस. मतकल, कोकन, कश्वर, काकीनाड़ा, कन्नानोर, कुदालोर, बसन, बुल्सर आदि।

युद्ध पोत घडियाल- यह युद्ध पोत 5500 टन विस्थापन क्षमता वाला विमान है, इस युद्ध पोत पर तैनात रडार, संचार उपकरण आदि स्वदेशी हैं। इस युद्धपोत पर एक हैलीकॉप्टर भी रखने की सुविधा है। यह राकेट प्रक्षेपण विमानभेदी तोपों आदि से सुसज्जित है, यह भारतीय सेना की पूर्वी कमान में शामिल है।

युद्ध पोत घडियाल

यह युद्ध पोत 5500 टन विस्थापन क्षमता वाला विमान है, इस युद्ध पोत पर तैनात रडार, संचार उपकरण आदि स्वदेशी हैं। इस युद्धपोत पर एक हैलीकॉप्टर भी रखने की सुविधा है। यह राकेट प्रक्षेपण विमानभेदी तोपों आदि से सुसज्जित है, यह भारतीय सेना की पूर्वी कमान में शामिल है।

आई.एन.एस. मैसूर- इसका निर्माण भारत में किया गया जो 6700 टन विस्थापित क्षमता के इस विध्वंसक पोत पर सतह से सतह पर मार करने वाले अनेक प्रक्षेपास्त्र तैनात हैं। इसके अतिरिक्त यह युद्धपोत दो बहुउद्देशीय हैलीकॉप्टर, प्रक्षेपास्त्र भेदी उपकरणों तथा पनडुब्बी भेदी तारपीडों से सुसज्जित है। जो पश्चिमी कमान में तैनात है। आई.एन.एस. मैसूर- यह विध्वंसक पोत 6700 टन विस्थापित क्षमता का सतह से सतह पर मार करने वाले अनेक प्रक्षेपास्त्रों के साथ ही यह युद्धपोत बहुउद्देशीय हैलीकाप्टर, प्रक्षेपास्त्र भेदी उपकरणों से सुसज्जित है जो पश्चिमी कमान में शामिल है। एडमिरल गोर्शकोव राष्ट्रपति पुतिन के भारत समझौते में रूस द्वारा यह विशाल और विश्व प्रसिद्ध विमान वाहक युद्ध पोत है जिसे रूस भारत को मुफ्त में देगा लेकिन इसका आधुनिकीकरण का व्यय भारत स्वयं करेगा। इन्द्र-2- यह आधुनिक राडार नीची उड़ान भरने वाले किसी हमलावर लड़ाकू विमान के आने की चेतावनी 90 कि0मी0 दूर से दे सकता है क्योंकि रडारों से बचने के लिये दुश्मन नीची उड़ान भरते हैं। आई.एन.एस. सावित्री- यह पहला युद्धपोत है जिसे हिन्दुस्तान पोतशाला लिमिटेड द्वारा निर्मित किया गया इसे 1990 में जल सेना में शामिल किया गया। आई.एन.एस. तलवार- यह भारतीय जल सेना में 2003 में शामिल किया गया है। यह युद्ध पोत रूस द्वारा निर्मित है। इसकी मुख्य भूमिका यह है कि यह अधिक दूरी तक मार कर सकने वाले हथियारों व सेंसर वाला सशस्त्र पोत है। इसका मुख्य लक्ष्य वर्टिकल लांच क्लव एन मिसाइल प्रणाली है।13 आई.एन.एस. सतपुड़ा- यह दूसरा स्वदेशी निर्मित युद्धपोत है जिसका जलावरण 2004 में मुंबई में किया गया इसके अन्तर्गत विकसिल थल से थल और थल से हवा तक के मिसाइल उच्च तकनीकी वाला रडार और संचार सामाग्रियां शामिल हैं। आई.एन.एस. सिंधुशस्त्र-भारत की प्रथम मिसाइल विरोधी पनडुब्बी है जिसे जुलाई 2000 में सेंट पीटर्सबर्ग में अधिकार में लिया गया। आई.एन.एस. विभूति - यह स्वदेशी निर्मित मिसाइल नाव है जिसे 1991 में जलावतरित किया गया। आई.एन.एस. विपुल- यह भी मिसाइल नाव है जिसमें थल से थल और थल से हवा में मार करने वाली मिसाइलें मौजूद हैं इसे 1992 में अधिकार में लिया गया। आई.एन.एस. नाशक- यह तीसरी मिसाइल नाव है जिसे भारत में निर्मित किया गया और 1993 में जलावतरित किया गया। आई.एन.एस. कदंव- भारत का सबसे बड़ा नौसैनिक बेस है जिसे सी वर्ड नामक प्रोजेक्ट के तहत पूरा किया गया। आई.एन.एस. जलाशव- अमेरिकी युद्धपोत यू.एस.एस. ट्रेटन को आई.एन.एस. जलाशव के नाम से भारतीय नौ सेना में शामिल किया गया, 17 जनवरी, 2007 को इस युद्धपोत को औपचारिक रूप से अधिकार में ले लिया गया है जो अमेरिका से भारत को मिलने वाला पहला नौ सैनिक पोत है। 1731 मी0 लम्बे व 17000 टन भार वाले इस पोत में 8 लैंडिंग नौकाएं और 6 एच. 3 सी बिग हैलीकाप्टर संचालित हो सकते हैं। प्रबल- जमीन से हवा में मार करने वाले मिसाइलों से सुसज्जित "आई.एन.एस.प्रबल" अब तक बनाई गये युद्धपोतों में सबसे ज्यादा 65 प्रतिशत स्वदेशी तकनीकी से निर्मित पहला युद्धपोत है जो मझगांव, गोदी में बनाया गया है। प्रबल 500 टन पानी विस्थापित करने के साथ-साथ 500 किलोवाट बिजली बनाने की क्षति रखता है। इसकी गति 35 सागर मील प्रति घंटा है। भारत-अमेरिकी सेना से कैलिबर गन लेने की ओर कदम बढ़ा रहा है। इन हथियारों को युद्धपोतों पर तैनात किया गया जायेगा। 127 मिमी

मीडियम कैलिबर बंदूके अमेरिकी बीएई सिस्टम द्वारा निर्मित की जाती है। सूत्रों के अनुसार भारतीय नौ सेना ने अमेरिका ड्रोन के साथ लीज समझौते के तहत इन्हें हासिल किया है।14

भारतीय तट रक्षक दल

भारतीय तट रक्षक दल की स्थापना 1 फरवरी, 1977 को भारतीय संघ के सशस्त्र बल के रूप में की गयी थी। यह दल रक्षा मंत्रालय के आधीन महानिदेशक तटरक्षक दल के नेतृत्व में कार्य करता है। इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है। तटरक्षक दल के मुंबई, चेन्नई और पोर्टब्लेयर में तीन क्षेत्रीय मुख्यालय हैं और दमन और चेन्नई में 2 एयर बेस हैं। इस दल का मुख्य दायित्व समुद्री सीमाओं एवं समुद्री क्षेत्र में भारत की राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने के लिये हुआ था। वर्तमान समय में इस बल के पास 75 जहाज, 44 एयरक्राफ्ट व हैलीकाप्टर तथा 50 से अधिक पोत हैं। ज्ञातव्य है कि अण्डमान निकोबार द्वीप समूह सहित देश के तटीय रेखा 200 समुद्री मील तक फैली हुयी भारतीय समुद्री सीमा का क्षेत्रफल 28 लाख वर्ग कि0मी0 है। तट रक्षक के कर्तव्यों में अब तटीय अधिष्ठानों की सुरक्षा, संकट में फंसे मछुवारों की रक्षा एवं सहायता, समुद्री पर्यावरण की सुरक्षा एवं परीक्षण, तस्करी रोधी अभियानों में सीमाशुल्क प्राधिकारियों की सहायता तथा समुद्री जीव एवं सम्पत्ति की सुरक्षा सम्मिलित है। तटरक्षक दल अपने गठन के आधार पर सहजतापूर्वक तीव्रगति से सामान्य कार्यकलापों से हटकर युद्ध की जिम्मेदारी सम्भाल लेता है तथा समुद्री क्षेत्रों की सुरक्षा एवं आक्रमकारी चुनौतियों का सामना करने के लिये पूर्णतः कटिबद्ध है।15

निष्कर्ष

निःसन्देह भारत की रक्षा सेनाओं ने छः दशकों से रक्षा प्रणाली का नया मॉडल गढ़ने के लिये भरपूर सफलता हासिल की है, भारत रक्षा प्रणाली में जिस प्रकार निरन्तर विकास कर रहा है उसमें कमी नहीं आनी चाहिए जिसके लिये हमें राजनीतिक और अर्थव्यवस्था में सर्वोपरि स्थान देना होगा। 21 वीं सदी में प्रतिरक्षा को संवारने के लिये हर राष्ट्र की सैन्य शक्ति में हो रहे गुणात्मक परिवर्तन उस राष्ट्र के राजनीतिज्ञों एवं समाज में देश प्रेम, कर्तव्यनिष्ठा की भावना का स्थान सर्वोपरि होना अतिआवश्यक है तभी देश की रक्षा प्रणाली को बल मिलेगा।

अक्टूबर 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नौसेना, वायुसेना और थल सेना के कमांडरों को सबोधित करते हुए कहा कि अब अंतरिक्ष पर नियन्त्रण बनाए रखने की आवश्यकता है। जिस प्रकार भूमि, हवा और सागर पर नियंत्रण आवश्यक है, उसी तरह अब अंतरिक्ष पर नियंत्रण भी अनिवार्य है।

सन् 2008 में मुम्बई फिर 2016 में पठानकोट उड़ी और पुलवामा की घटनाओं के कारण देश में राष्ट्रीय सुरक्षा को लेकर जागरूकता काफी बढ़ी है। ऐसा कुछ पहले 1999 में कारगिल युद्ध के बाद हुआ था। दो दशक में युद्ध और रक्षा के तौर-तरीके में काफी बदलाव आया है। अब लम्बी लड़ाईयॉं का वक्त नहीं है। अधिकांश युद्ध छोटे होंगे और उनमें तकनीक की अधिक भूमिका होगी। सेनाओं का सामना अब छापामार-युद्धों से है, जैसा कश्मीर में पाकिस्तानी इशारे पर चल रहा है। गत 26 फरवरी को बालाकोट में जैश-ए-मुहम्मद के टेªनिंग सेंटर पर हवाई हमला कुछ मिनटों में पूरा हो गया। आने वाले वक्त की लड़ाई में शामिल सारे योद्धा परम्परागत फौजियों जैसे वर्दीधारी नहीं होंगे। काफी लोग कंम्प्यूटर कंट्रोल रूम के पीछे बैठ कर काम करेगें। अधिकांश लोग नागरिकों के वेश में होंगे, पर छापामार सैनिकों की तरह महत्वपूर्ण ठिकानों पर हमला करके स्थानीय नागरिकों के बीच मिल जाएॅंगे। जिनमें काफी लोग ऐसे होगें जो अराजकता का फायदा उठाकर अपने हितों को पूरा करेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *विकीपीडिया के अनुसार 6 अप्रैल 2021।*
2. *भारतीय रक्षा एवं सुरक्षा-डॉ एल0जे0िसंह, संस्करण-2011, पेज-335।*
3. *भारतीय रक्षा एवं सुरक्षा-डॉ एल0जे0िसंह, संस्करण-2011, पेज-204।*
4. *सिविल सर्विसेज क्रॉनिकल, जून-2016, पेज-13।*
5. *समसामयिकी महासागर, अप्रैल-2007, पेज- 56।*
6. *सिविल सर्विसेज क्रॉनिकल, जून-2016, पेज-14।*
7. *विकीपीडिया 15 अगस्त 2021*
8. *विकीपीडिया 29 जनवरी 2018*
9. *विकीपीडिया 18 नवम्बर 2019।*
10. *विकीपीडिया 15 अगस्त 2021*
11. *सिविल सर्विसेज क्रॉनिकल, जून-2016, पेज-14।*
12. *समसामयिकी महासागर, अप्रैल-2007, पेज- 55।*
13. *तदैव।*
14. *विकीपीडिया 6 जनवरी 2021*
15. *विकीपीडिया 24 मई 2021।*